मस्तमौला चूहा

ईव, चित्र : पॉल, हिंदी : विदूषक

मस्तमौला चूहा

ईव, चित्र : पॉल, हिंदी : विदूषक

पूरे फ्रांस में अनातोले से ज्यादा खुश, संतुष्ट शायद और कोई चूहा नहीं था.

वो छोटे से चूहों के एक गाँव में रहता था.

गाँव पेरिस के पास था.

उसके साथ उसकी पत्नी – दोउचेट रहती थी.

साथ में छह प्यारे बच्चे भी थे –

हरेक शाम को जब आसमान में अँधेरा छा जाता, तब सब पति और पिता अपने परिवार के लिए खाना खोजने के लिए साइकिलों पर पेरिस की मुख्य सड़क का दौरा करते.

पेरिस पहुंचे ने बाद चूहे लोगों के घरों में गुप्त रास्तों से घुसते. वो रास्ते सिर्फ उन्हें ही पता थे. अनातोले का साथी गैसटन अक्सर उसके साथ होता.

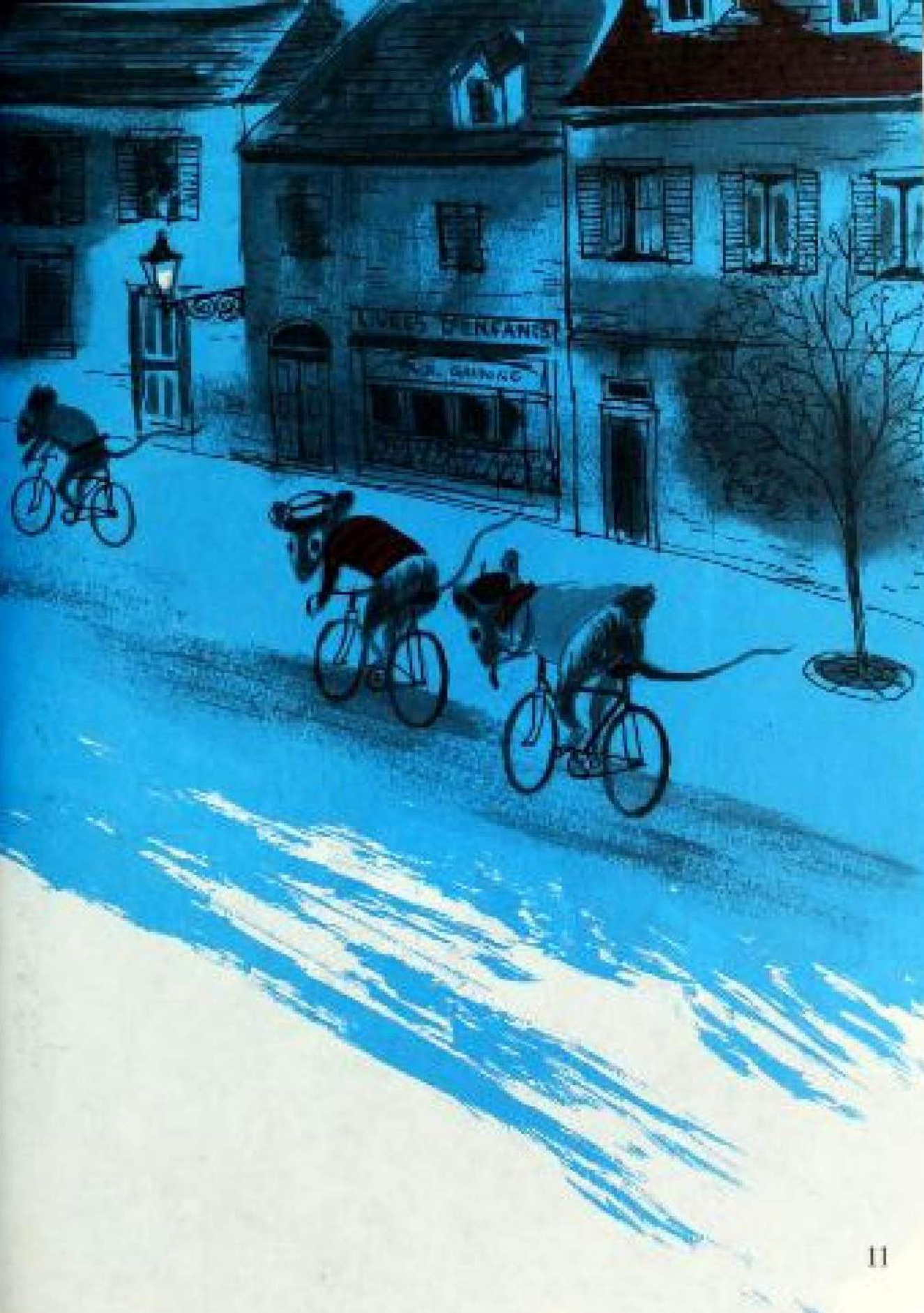
LIVRES D'ENFANTS

एक रात जब वो किसी के किचन में बचा हुआ खाना ढूँढ रहे थे तब अनातोले ने पास के कमरे में लोगों को बातें करते हुए सुना. वे चूहों के बारे में बातें कर रहे थे. जिज्ञासु अनातोले, सोफे के नीचे छिप गया और उनकी बातें सुनने लगा.

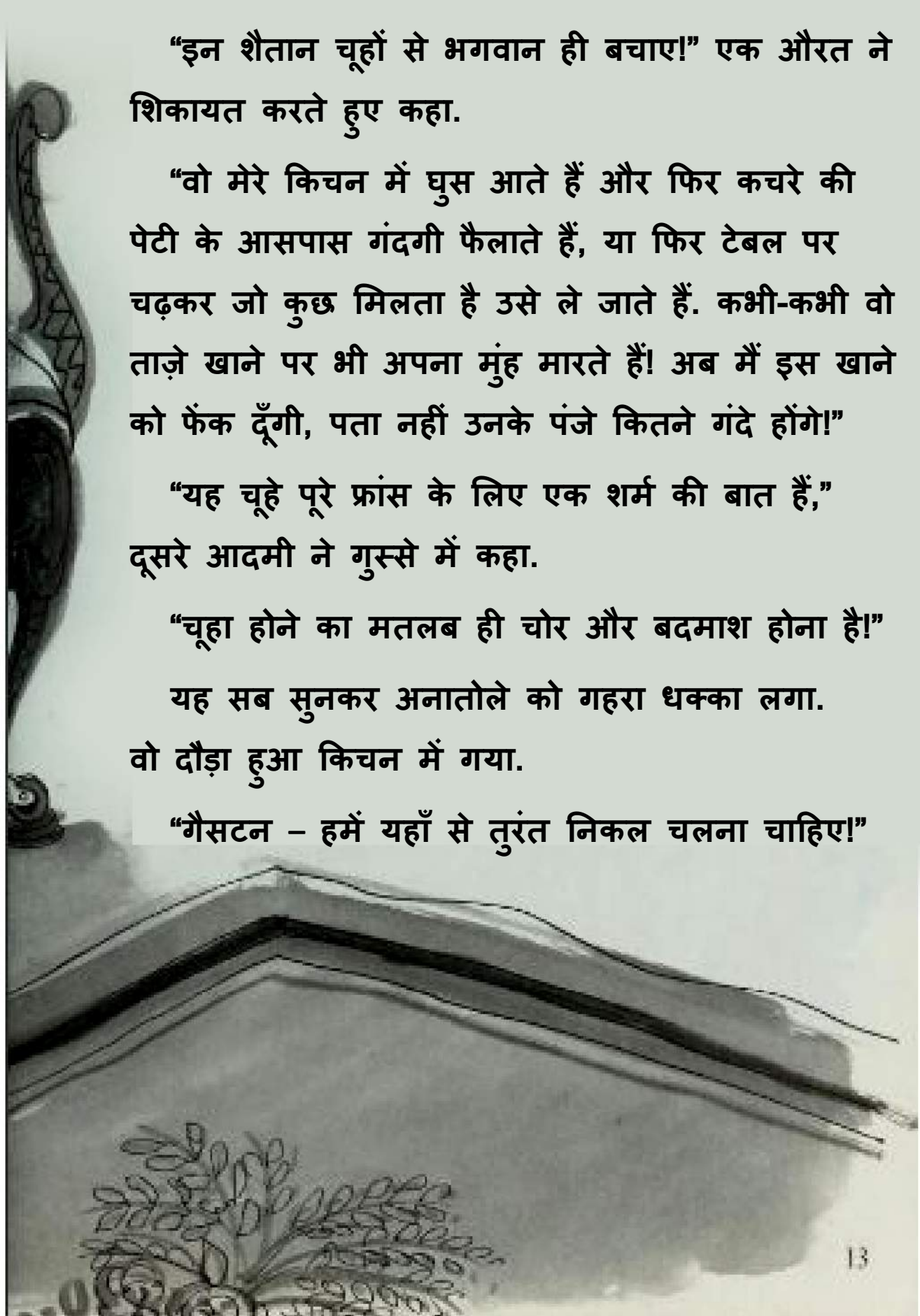

“इन शैतान चूहों से भगवान ही बचाए!” एक औरत ने शिकायत करते हुए कहा.

“वो मेरे किचन में घुस आते हैं और फिर कचरे की पेटी के आसपास गंदगी फैलाते हैं, या फिर टेबल पर चढ़कर जो कुछ मिलता है उसे ले जाते हैं. कभी-कभी वो ताज़े खाने पर भी अपना मुंह मारते हैं! अब मैं इस खाने को फेंक दूँगी, पता नहीं उनके पंजे कितने गंदे होंगे!”

“यह चूहे पूरे फ्रांस के लिए एक शर्म की बात हैं,” दूसरे आदमी ने गुस्से में कहा.

“चूहा होने का मतलब ही चोर और बदमाश होना है!”

यह सब सुनकर अनातोले को गहरा धक्का लगा. वो दौड़ा हुआ किचन में गया.

“गैसटन – हमें यहाँ से तुरंत निकल चलना चाहिए!”

“यह तो छोटी सी बात है,” गैसटन ने हंसते हुए कहा.

“लोग, लोग होते हैं, और चूहे, चूहे होते हैं. हमारे प्रियजनों को खाना मिलना चाहिए. और वो खाना हमें लोगों के घरों से ही मिल सकता है.”

“पर मुझे सपने में भी यह उम्मीद नहीं थी कि लोग हमारे बारे में ऐसा सोचते होंगे,” यह कहकर बेचारा अनातोले दुखी होकर रोने लगा.

“इस तरह की गालियाँ सुनकर मुझे बहुत धक्का लगा है! मैं अपमानित महसूस कर रहा हूँ. मेरे आत्म-सम्मान? मेरी इज्ज़त? को चोट पहुंची है.”

गैसटन को उससे कोई ख़ास फर्क नहीं पड़ा. “अनातोले गौर से सोचो, और खुद को संभालो!”

दोउचेट ने अनातोले को शांत करने के लिए प्यार के दो शब्द कहे.

“तुमने बिल्कुल सच कहा, अनातोले,” दोउचेट ने दुखी होते हुए कहा. “काश की हम, लोगों को कुछ अच्छा वापिस दे पाते – पर लगता है ऐसा करना संभव नहीं होगा!”

यह सुनकर अनातोले बेहद खुश हुआ और फिर वो कमरे में दोउचेट के साथ नाचने लगा.

“असंभव? शायद संभव हो जाए! शुक्रिया, तुमने मुझे एक बढ़िया आईडिया दिया है.”

फिर अनातोले अपने टाइपराइटर पर बैठा और उसने तीस-चालीस सन्देश टाइप किये:

बेहद ख़ास और उम्दा

बहुत अच्छा

अच्छा

इतना अच्छा नहीं

ख़राब

फिर उसने कागज़ के हर सन्देश में एक पिन लगाई और उन्हें संभालकर अपने ब्रीफकेस में रखा.

उस शाम पेरिस की ओर साइकिल पर जाते हुए अनातोले ने कहा, “गैसटन तुम शायद खुदको अपमानित महसूस करो अगर मैं अब से अकेला ही घरों में जाऊं? पर मेरे दिमाग में एक आईडिया है और मुझे उसपर गुप्त रूप से कार्यवाही करनी है.”

गैसटन ने उत्तर दिया, “मैं तुम्हारा अज़ीज़ दोस्त हूँ. दोस्त कभी भी अपमानित नहीं होता है. मुझे तुम पर पक्का यकीन है. तुम अपने मुहीम में सफल हो, गुड-लक!”

पेरिस पहुंचने के बाद अनातोले अपने ग्रुप से अलग हो गया. वो शहर में उस तरफ गया जहाँ फैक्ट्री और उद्योग थे. उसने अपनी साइकिल दुवाल पनीर फैक्ट्री के सामने पार्क की.

उसने अपने शरीर को चपटा किया और फिर दरवाज़े के नीचे से फैक्ट्री में घुसा. साथ में उसका ब्रीफकेस भी था. अन्दर कितनी सुन्दर महक थी! उसने अपनी संवेदनशील नाक से अनेकों प्रकार के पनीर को चखा – कैमेम्बर्ट, पोर्ट सलूट, ब्लू, सेंट मर्सलिन, रोकफोर्ट, ब्री आदि.

मैं पूरी रात खड़े-खड़े ऐसा नहीं कर सकता, उसने सोचा. मुझे अभी बहुत ज़रूरी काम करना है!

फिर वो कई अँधेरे गलियारों में से ढूँढता-खोजता अंत में उस कमरे में पहुंचा जिस की उसे तलाश थी – यह पनीर चखने वाला "टेस्टिंग-रूम" था.

कमरे में मंद रोशनी थी और वो लम्बी लकड़ी की मेजों से भरा था. उन मेजों पर अलग-अलग किस्म और आकारों के पनीर सजे रखे थे.

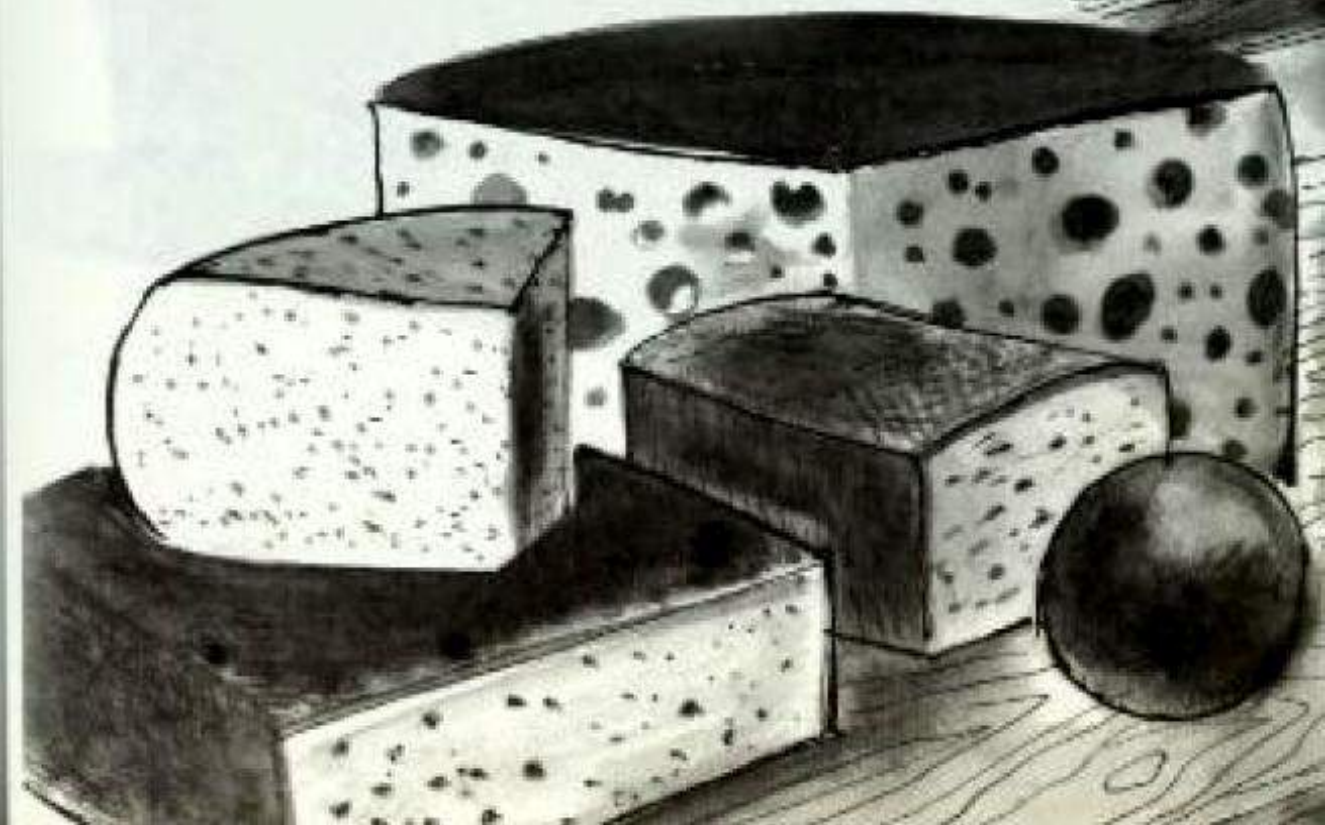

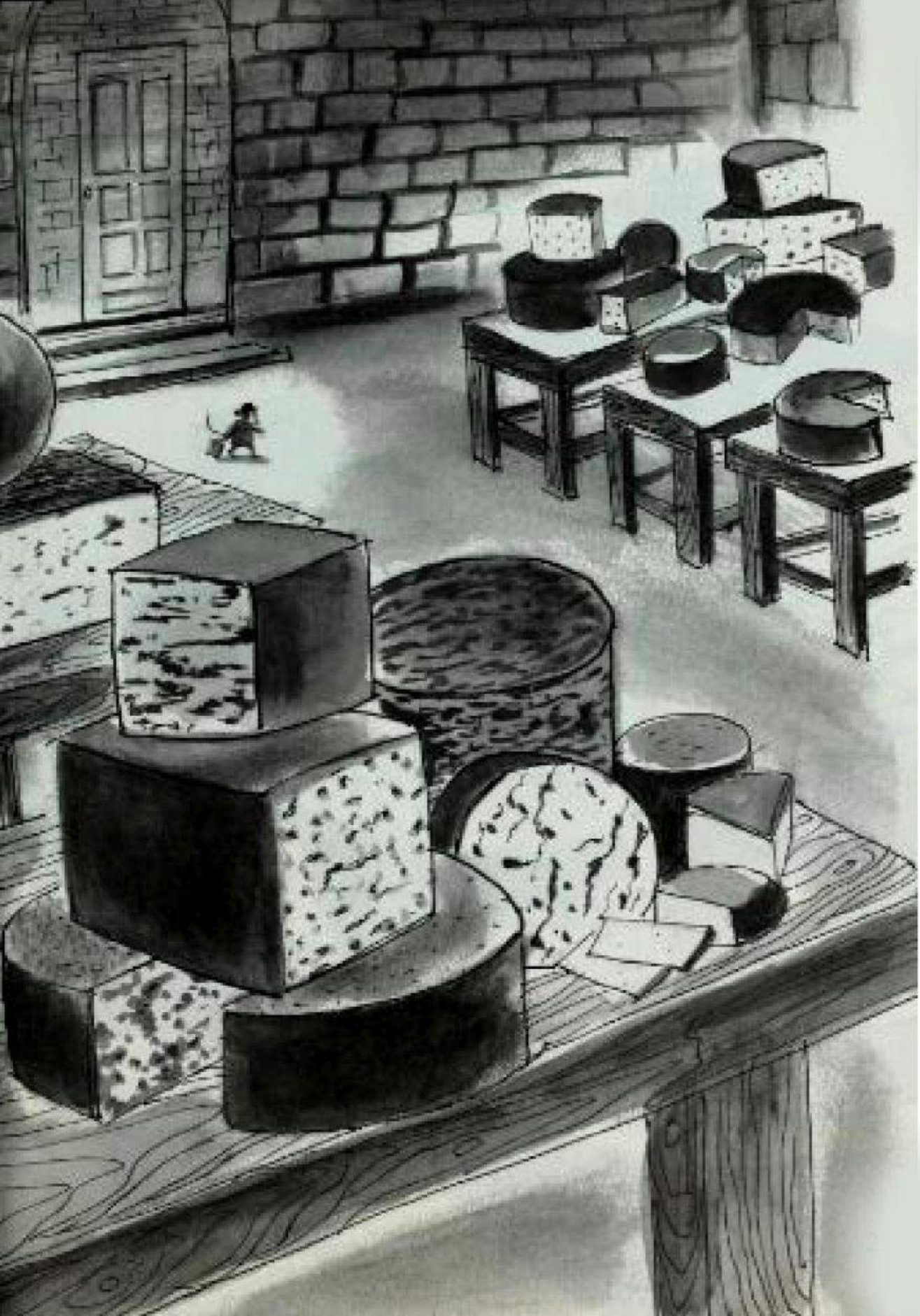

बिना कुछ देरी किए अनातोले सब से नज़दीक वाली मेज़ पर चढ़ा.

सबसे पहले उसने कैमेम्बर्ट पनीर को चखा. “बढ़िया! एकदम उम्दा पनीर!”

फिर उसना अपना ब्रीफकेस खोला और उसमें से “बेहद ख़ास और उम्दा” वाली पर्ची निकाली और उसे पनीर में पिन से लगा दिया.

अगला पनीर उसे कुछ तीखा लगा. उसने उसमें “इतना अच्छा नहीं” वाली चिट चिपका दी.

उसके बाद अनातोले ने लम्बी कतारों में सजे तमाम पनीर के सैंपलों को चखा. उसने पूरी रातभर यह इंस्पेक्शन किया और हरेक सैंपल में उसकी गुणवत्ता की पर्ची चिपकाई.

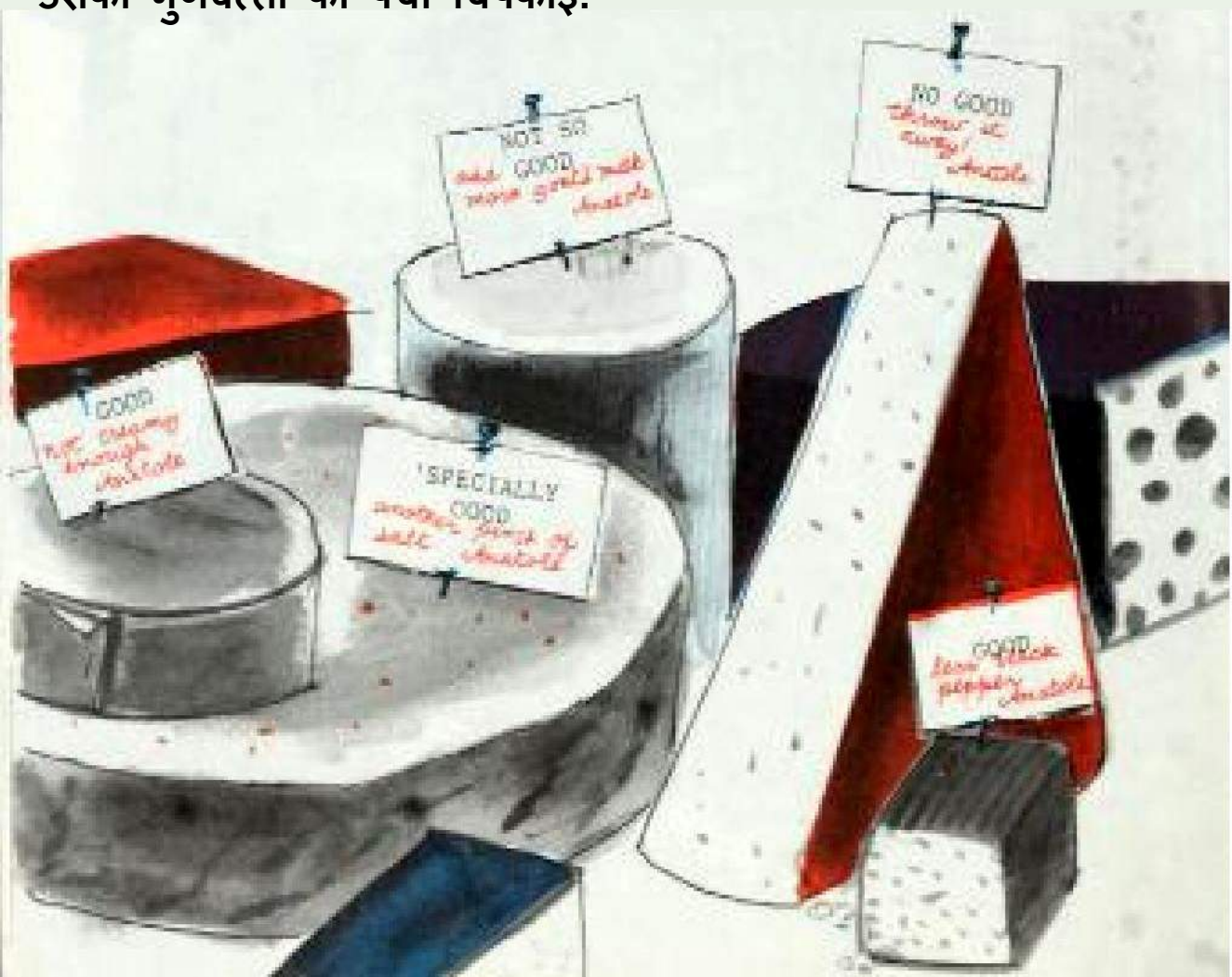

अंत में उसका काम ख़त्म हुआ.

"चलो मैं दुवाल पनीर फैक्ट्री को एक-दो अच्छे सबक तो सिखा ही सकता हूँ. दुनिया भर में चूहों को पनीर टेस्टर की हैसियत से सबसे अव्वल माना जाता है! अब मैं यहाँ का कुछ पनीर बड़े गर्व से अपने घर ले जा सकता हूँ, क्योंकि मैंने अपनी मेहनत से उसे कमाया है!"

अगले दिन दुवाल पनीर फैक्ट्री में भयंकर उत्साह था. हरेक कोई अचरज कर रहा था कि वो छोटी-छोटी पर्चियां किसने लगाई थीं. तभी फैक्ट्री के मालिक मिस्टर हेनरी दुवाल वहां पहुंचे.

"हमें जल्द ही मालूम पड़ जाएगा कि यह अनातोले पनीर के बारे में कितना जानता है!" उसके बाद मिस्टर दुवाल ने कुछ रॉकफोर्ट पनीर चखा.

"बिल्कुल सही! अनातोले ने सही ही कहा – इस पनीर में कुछ संतरे के छिलके और डालना चाहिए! अब तुम सब लोग ज़रा ध्यान से सुनो – हमारा धंधा कुछ समय से गहरी मंदी से गुज़र रहा है. हम लोग अब अपने पनीर अनातोले के सुझाए तरीके के अनुसार ही बनायेंगे. और फिर देखेंगे कि धंधा बढ़ता है या नहीं."

हर रात अनातोले कुछ और छोटी पर्चियां छोड़ जाता. फिर हर दिन दुवाल पनीर फैक्ट्री के मजदूर पनीर में कुछ नई बदल करते.

जल्द ही उनका धंधा चमकने लगा!

पूरे फ्रांस में लोग सिर्फ दुवाल पनीर की ही मांग करने लगे. दुवाल पनीर फैक्ट्री की बिक्री इतनी बढ़ी कि मिस्टर दुवाल को अपनी फैक्ट्री को बढ़ाना पड़ा और फिर उन्होंने सभी मजदूरों की तनख्वाह भी बढ़ाई. फिर भी उन्हें यह पता नहीं चला कि वो पर्चियां कौन लगाता था.

“अनातोले अपना काम छिप-छिपकर क्यों करता है? वो सामने क्यों नहीं आता?” मिस्टर दुवाल ने अपनी सेक्रेटरी से पूछा.

“हमें अनातोले को सम्मानित करने के लिए एक बड़ा पुरुस्कार देना चाहिए – हमारे धंधे की शोहरत, कामयाबी और आमदनी सब उसी के कारण है!”

फिर मिस्टर दुवाल ने एक छोटा पत्र लिखा जिसमें उन्होंने अनातोले से मिलने की अपनी प्रबल इच्छा ज़ाहिर की. अनातोले ने अपने जवाब में लिखा कि वो “अनाम” ही रहना पसंद करेगा.

मिस्टर दुवाल ने अनातोले नाम के हरेक कर्मचारी को अपने कमरे में बुलाया और उनसे सवाल-जवाब किए. पर उनमें से किसी ने भी वो पर्चियां नहीं लगाई थीं.

मिस्टर दुवाल ने बहुत हाथ-पैर मारे पर उनसे कोई फायदा नहीं हुआ. अनातोले का रहस्य, एक रहस्य ही बना रहा!

फिर एक दिन मिस्टर दुवाल ने अपनी सेक्रेटरी को बुलाया और उन्होंने उसे एक लम्बी चिट्ठी टाइप करने को कहा.

उस रात अनातोले को वो चिट्ठी मिली.

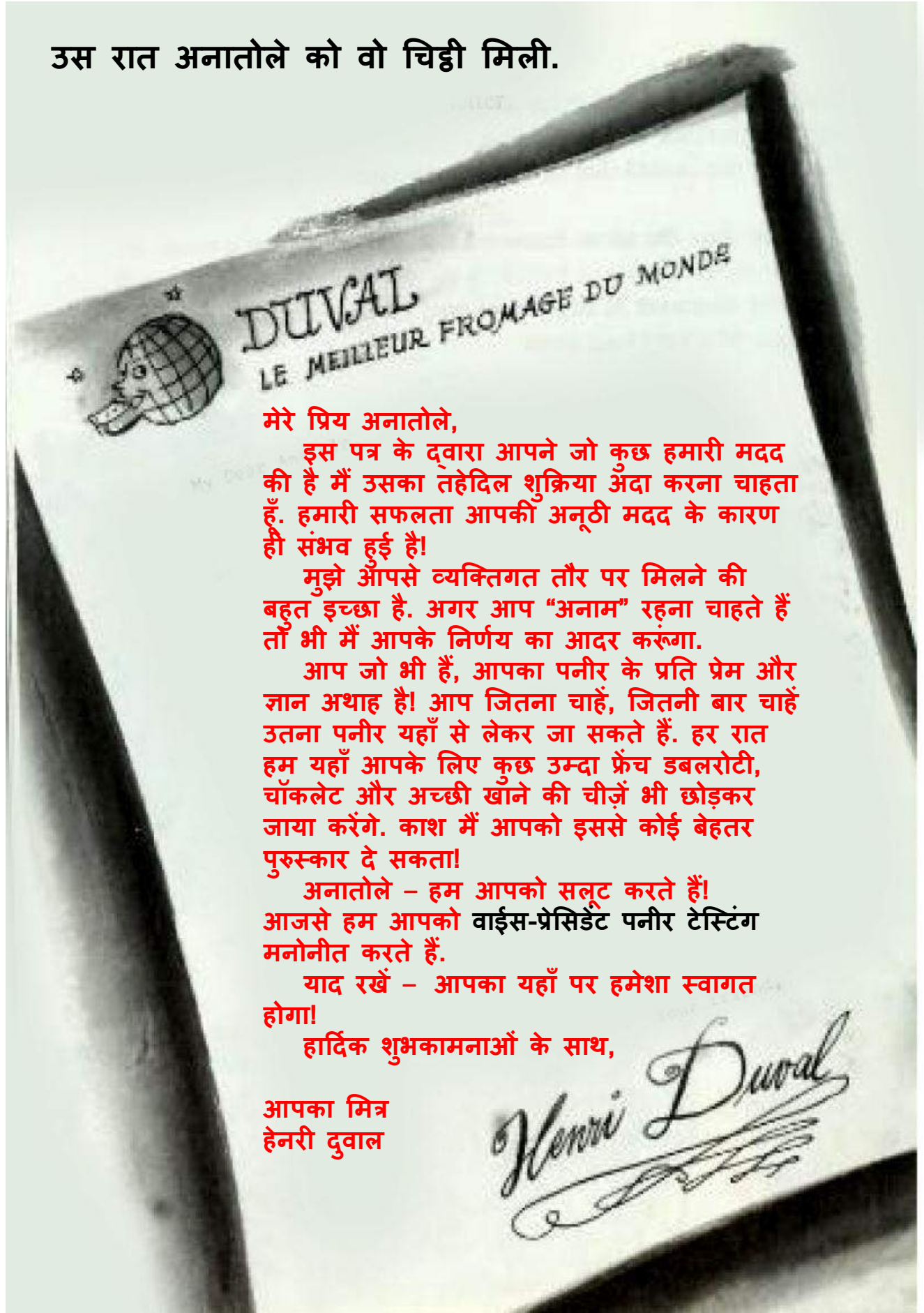

मेरे प्रिय अनातोले,

इस पत्र के द्वारा आपने जो कुछ हमारी मदद की है मैं उसका तहेदिल शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ. हमारी सफलता आपकी अनूठी मदद के कारण ही संभव हुई है!

मुझे आपसे व्यक्तिगत तौर पर मिलने की बहुत इच्छा है. अगर आप "अनाम" रहना चाहते हैं तो भी मैं आपके निर्णय का आदर करूंगा.

आप जो भी हैं, आपका पनीर के प्रति प्रेम और ज्ञान अथाह है! आप जितना चाहें, जितनी बार चाहें उतना पनीर यहाँ से लेकर जा सकते हैं. हर रात हम यहाँ आपके लिए कुछ उम्दा फ्रेंच डबलरोटी, चॉकलेट और अच्छी खाने की चीज़ें भी छोड़कर जाया करेंगे. काश मैं आपको इससे कोई बेहतर पुरुस्कार दे सकता!

अनातोले – हम आपको सलूट करते हैं! आजसे हम आपको वाईस-प्रेसिडेंट पनीर टेस्टिंग मनोनीत करते हैं.

याद रखें – आपका यहाँ पर हमेशा स्वागत होगा!

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

आपका मित्र
हेनरी दुवाल

Henri Duval

जब दोउचेट ने वो पत्र देखा तो उसने कहा, “आज से तुम्हें किसी भी अजनबी के घर में ताका-झांकी करने की कोई ज़रुरत नहीं है. तुम्हें अब वैसे नीच काम करने की कोई ज़रुरत नहीं है! तुम दुनिया के सबसे काबिल और होशियार चूहे हो!”

पॉल और पौलेट
क्लौड और क्लौदेत
जॉर्ज और जोर्जेट, अनातोले की कुर्सी पर चढ़े और उन्होंने उसे गले लगाया.
“हमें आप पर बहुत गर्व है! हमारे पिता अब एक बहुत इज्ज़तदार बिज़नसमैन-चूहे हैं !”

अगले दिन अनातोले ने गैसटन को अपना हेल्पर बनने के लिए आमंत्रित किया.

गैसटन ने झुककर सलाम किया और कहा, “आपके साथ काम करके मुझे ख़ुशी होगी!”

फिर गैसटन ने अपने मित्र के दोनों गालों को चूमा और रोते हुए कहा: “अनातोले जिंदाबाद! क्या वो अपनी पुरानी ज़िन्दगी से संतुष्ट था? नहीं, नहीं! वो एक इज्ज़तदार और होशियार चूहा है. एकदम कमाल का चूहा!”

अनातोले का रहस्य, हमेशा रहस्य बना रहा.

इसलिए अगर आप किसी चूहे को बचा खाना ढूँढ़ते हुए देखें तो आप कह सकते हैं कि वो अनातोले नहीं होगा. अनातोले फ्रांस का सबसे खुश और संतुष्ट चूहा है.